

शेर और गाय

एक गांव में बहुत सारी गायें थे और वो चारा के लिए पास के लिए बगल वाले जंगल में जाते थे। उसी जंगल में बहुत खूंखार शेर रहता था। जब भी गायें जंगल में जाती थी, शेर एक गाय को चुनकर उसे मार देता था और उसका मांस खा जाता था। इस बात को लेके गायों ने एक बैठक बुलाई और उसमें समझदार गाय ने कहा "आप लोग सब जानते हैं की शेर हम में से एक को मार के खा जाता है। और उसका कारण यह की हम सब अलग अलग जंगल में चरने के लिए जाते हैं"।

आज से हम सब लोग एक साथ चलेंगे और चरेंगे। "सभी गायें जंगल में निकल पड़ी और जैसे ही जंगल में शेर दिखा, सभी गाय झुण्ड में तरफ धावा बोल दिया"। शेर यह देख के डर गया और वहाँ से भाग गया।

तात्पर्य :- विभाजित हम गिर जाते हैं। सयुंक्त हम खड़े ।

मुख्य बकरियां

एक गांव के समीप एक नदी बहती थी। उस पर वृक्ष के तने का एक पुल पड़ा था ल वह पुल इतना तंग था कि उससे एक समय में एक ही व्यक्ति गुजर सकता था।

एक बार एक बकरी उस पुल पर से गुजरने लगी। दूसरी तरफ से एक और बकरी उसी पुल पर चली आई। वो दोनों पुल के ठीक बीचो - बीच एक दूसरे के सामने आकर डटकर खड़ी हो गई।

एक बकरी ने गुस्से में कहा - ' पहले मुझे गुजरने दे। तू पहले मुझे गुजरने दे। तू पीछे चली जा। ' दूसरी बोली - 'नहीं, मैं पीछे कि ओर नहीं जाऊंगी। इतनी दूर आगे आ चुकी हु। तू ही क्यों नहीं पीछे मुड़ जाती ? पहले मुझे पार जाने दे। '

दोनों बकरियां मुख थी। कोई भी पीछे न मुड़ी। जिद
कि मारी दोनों अड़ गई। फिर आपस में उलझ गई। परिणाम
यह हुआ कि दोनों नदी में गिर पड़ी और डूब गई।

शिक्षा :- मुख लोग जिद पे अड़कर हानि उठाते ।

छोटी चीज में बड़ी बात

एक बालक ने पानी माँ को कुछ लिखते हुए देखा, तो बोला, 'माँ, आप पेंसिल से क्यों लख रही है ?' माँ, बोली, बेटा, मुझे पेंसिल से लिखना अच्छा लगता है । इसमें कई गुण है । 'बालक चौंका और बोला, 'दिखने में तो यह पेन्सिलों जैसी ही हैं। लिखने के आलावा इसमें और कौनसा गुण है ?' माँ बोली, 'यह जीवन से जुड़ी कई अहम् सीखे हमें सकती है । इसके पाँच गुण तुम अपना लो, तो इस संसार में शांतिपूर्वक रह सकोगे ।

पहला गुण- तुम्हारे भीतर बड़ी से बड़ी उपलब्धि हासिल करने की योग्यता है । लेकिन तुम्हें सही दिशा में निर्देशन चाहिए । यह दिशा निर्देशन वह ईश्वर देगा और हमेशा अच्छी रह पर चलाएगा । दूसरा गुण - लिखते - लिखते बिच में रुकने पड़ता है । पेन्सिल की नॉक को पैना करना पड़ता है । इससे इस

कष्ट होता हैं । लेकिन यह अच्छा लिख पाती हैं।
इसलिए अपने दुःख, हार को धैर्य से सहन करो । तीसरा
गुण - पेन्सिल गलतिया सुधारने के लिए रबड़ के प्रयोग
के इजाजत देती हैं । इसलिए कोई गलती हो तो उसे
सुधर लो । चौथा गुण - पेन्सिल में महत्व बाहरी लकड़ी
का नहीं, अंदर के ग्रेफाइट का हैं इसलिए अपने बाहरी
रूप से ज्यादा अपने अंदर चल रहे विचारों पर गौर करे
। पांचवा गुण - पेन्सिल हमेशा निशान छोड़ जाती हैं ।
तुम भी अपनी कामों अच्छे निशान छोड़ो ।

सीख :-छोटी छोटी चीजों से भी बड़ी चीज समझी जा
सकती हैं और अपने जीवन को परिवर्तित किया जा
सकता ही ।

राजा बलि की कथा

एक बार महाराज युधिष्ठिर ने भगवन श्री कृष्ण से विनयपूर्वक पूछा की, हे भगवान् !आप मुझे कृपा कर कोई ऐसा व्रत या अनुष्ठान बतायें, जिसके करने से मैं अपने नष्ट राज्य को पुनः प्राप्त कर सकूँ, क्योंकि राज्यच्युत हो जाने के कारण मैं अत्यंत दुःखी हूँ ।

श्री कृष्ण ने कहा - हे राजन ! मेरा परमभक्त दैत्यराज बलि ने एक बार सौ अश्वमेध यज्ञ करने का संकल्प किया । निनयानवे यज्ञ तो उसने निर्विधन रूप से पूर्ण कर लिए, परंतु सौवा यज्ञ के पूर्ण होते ही उन्हें अपने राज्य से निर्वासित होने का भय सताने लगा । देवताओ को साथ लेकर इंद्र क्षीरसागर निवासी भगवान् विष्णु के पास पहुंचकर वेद-मंत्रो से स्तुति को और

अपने कष्ट का सम्पूर्ण वृत्तांत भगवान् विष्णु से कह सुनाया । सुनकर भगवान् ने उनसे कहा - तुम निर्भय होकर अपने लोक में जाओ । मैं तुम्हारे कष्ट को शीघ्र ही दूर करूंगा ।

इंद्र के चले जाने पर भगवान् ने वामन का अवतार धारण कर बटुवेश में राजा बलि के यज्ञ में प्रस्थान किया । राजा बलि को वचनबद्ध कर भगवान् ने तीन पग भूमि उनसे दान में मांग ली । बलि द्वारा दान का संकल्प करते ही भगवान् ने अपने विराट रूप से दान एक पग में सारी पृथ्वी को नाप लिया । दूसरे पग से अंतरिक्ष और तीसरा चरण उसके सर पर रख दिया । राजा बलि की दानशीलता से प्रसन्न हो भगवान् ने उससे वर मांगने को कहा । राजा ने कहा, - कार्तिक

कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी से अमावस्या तक अर्थात् दीपावली तक इस धरती पर मेरा राज्य रहे । इन तीन दिनों तक सभी लोग दीप -दान कर लक्ष्मी जो की पूजा करे और करता के गृह में लक्ष्मी का वास हो ।

राजा द्वारा याचित वर को देकर भगवान् ने बलि को पातालपुरी का राज्य लोक को भेज दिया । उसी समय से देश के सम्पूर्ण नागरिक इस पुनीत दीपावली पर्व को मानते चले आ रहे हैं । अतः सभी प्राणिओ के लिए इस पर्व को सदभावना पूर्वक मानना आवश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य भी है ।